लाल फूलों की टहनी

विनोदचंद्र पांडेय





राजकमल प्रकाशन

प्रथम संस्करण १९६१

मूल्य ६ रुपये

प्रकाशक
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
दिल्ली

मुद्रक
सम्मेलन मुद्रणालय
प्रयाग

क्रम

		पृष्ठ
१. लाल फूलों की टहनी	.. ..	९
२. जैसलमेर	.. ..	४९
३. श्रद्धा की झील	.. ..	७१
४. एक बीमार लड़की	.. ..	९५
५. एक था राजा	.. ..	१०९
६. समूह	.. ..	१३७
७. मुहूर्त	.. ..	१५९

लाल फूलों की टहनी

१.	लाल फूलों की टहनी	९	२१.	उसका पक्ष : विश्वास	३०
२.	चिट्ठी	१०	२२.	उसका पक्ष : वरदान	३१
३.	जाने के बाद	१२	२३.	उसका पक्ष : रोज़ सहल	३२
४.	ओ लापरवाह	१३	२४.	अक्टूबर में विदाई	३३
५.	रूप और गुण	१४	२५.	असंभव	३४
६.	जवाब	१५	२६.	टोस्ट	३५
७.	निश्छलता	१६	२७.	अनुपयुक्त	३६
८.	एक धुंधली रात	१७	२८.	बिट्रेएड	३७
९.	छोटी छोटी बातें	१८	२९.	सौंदर्य	३८
१०.	मैं और अँधेरा	१९	३०.	आउटसाइडर	३९
११.	सुबह	२०	३१.	बरसात	४०
१२.	असम्भव कार्य	२१	३२.	बिटर स्वीट	४१
१३.	उसका पक्ष : दाग़	२२	३३.	कवच	४२
१४.	उसका पक्ष : कृतज्ञता	२३	३४.	आख़िरी चाँद	४३
१५.	उसका पक्ष : एक मिलन	२४	३५.	'बेवफ़ा'	४४
१६.	उसका पक्ष : काँपता वक्ष	२५	३६.	इन्तज़ार में	४५
१७.	उसका पक्ष : जीवन और हृदय	२६	३७.	शुभ कामना	४६
१८.	उसका पक्ष : तुमसे तुम्हारे मित्र	२७	३८.	तुम्हारी आँखें	४७
१९.	उसका पक्ष : खिड़की के बाहर	२८	३९.	इतनी इच्छाएँ	४८
२०.	उसका पक्ष : मझ पर गीत	२९			

लाल फूलों की टहनी

जीवन भर की हलचल
जिन्हें न कर सकी शांत
वे इच्छाएँ, क्या मृत्यु
सुला देगी यूँ ही ?

मुझ में अंत के बाद
करुण और शोभामय
इनका जन्म होगा
कहीं और

किसी दुबली लड़की के
हाथ में काँपतीं
ये बनेंगीं
लाल फूलों की एक टहनी,
रोशनी करती शोर !

चिट्ठी

तुम्हीं ने न कहा
शराब मत पीना
सम्हालो यह
अस्त व्यस्त जीना

इतनी मधुर तुम स्वयं
इतनी हँसमुख
तुमने कब और कैसे जाने
हृदय के कठिन कठोर दुख

तुम पर तैरता है अभी
तरल बचपन
सिनेमा - गुस्सा - झगड़ना,
इनमें झूलता मन

किसी ने कहा
तुम्हें खिड़की से झुके देख
न झुको ज्यादा
बाहर है तेज़ हवा
तेज़ पश्चिम की हवा

तो तुम इस तरह की
विश्व भार से हल्की
तुमने कहाँ देखा
उदासी का छायामय चेहरा
देखा - रखा याद
और फिर उस पर हँस दीं

नहारगढ़ कल
झिलमिला रहा था
अँधेरे पहाड़ पर
बत्तियों से सजा
परियों का महल

मन में आया, काश
जो जो सौंदर्य
तुमने देखे न
कुछ कम रह गए
सौंदर्य में

तुम्हारी दृष्टि
सजीव करती थी
तुम्हारी उपस्थिति . . .

जाने के बाद

तुम यहाँ लेटी थीं
तुम बैठी थीं वहाँ
धुँधियाले – ऐसे ही समय
तुमने कुछ कहा था

नौकर बुहार चुका कमरे
सब अधजली सिगरटें
हँसी की आखिरी प्रतिध्वनि
समा चुकी दीवारों में

ओ लापरवाह

छोड़ दिया इस आसानी से साथ
उसी हँसी से चल दीं
लापरवाह

जब भी मेंह की बूँदें
मुख पर खेलेंगी
जब भी देखूँगा
किसी दुबली लड़की को
बेसुध हँसते

लौटेगा तुम्हारी स्मृति का ज्वार
ओ लापरवाह

रूप और गुण

मुझे नहीं मालूम
क्या गुण हैं तुम में
और क्या नहीं

जब तुम्हें देखा
सुख से अशक्त था
मन को इस तरह की
फुरसत थी नहीं

एक छोटा - सा नाम
मेरे विश्व को
भर देता गूँज से
शायद गुण से
शायद रूप से

जवाब

तुम्हें, पश्चिमी हवा की तरह—
वे मुड़ जाते पेड़
हर पत्ती फरफराती—

झकझोर कर पूछूं
क्यों न दिए तुमने जवाब

रात भर मन पुकारता रहा

निश्छलता

तुम्हारी निश्छलता से प्यार
भय लगता है
भाव हो जाते लज्जाशील
आकाश से चाँद
झाँक रहा है
तुम खुश हो फूलों को
हाथों में उछालते
मेरा मन काँप रहा है

एक धुँधली रात

मुझे क्यों सहा तुमने
मुझमें क्या देखा तुमने
ओस से धुँधली रात
पश्चात्ताप ही पाने को
मुझसे प्यार किया तुमने

छोटी छोटी बातें

मन तुम्हारे बारे में
क्या क्या सोच चुका
इतना आत्मीय बना
परन्तु मिलने पर
वही अजनबीपन
दो शब्द न बोल सका

मैं पूछना चाहता
छोटी छोटी बातें :
किस करवट सोती हो तुम
जाड़े पसंद हैं या बरसात
इंतज़ार या अचकचा जाना
रोशनदानों में धूप
और छोटी चिड़ियाँ
बाग से उठते ऊपर
झुंड में कबूतर
ओस सम्हाले
मकड़ी के जाले
यात्राएँ—घर लौटना...
कमबख्त रहा झिझका

मैं और अँधेरा

मेरी नींद कल भी
खिड़की के सिरे से
चाँद के डूबते ही
खुल गई, उस दिन की तरह

चाँदनी के सहलावे में
तुम सो रही थीं मधुर
सरकता किरणों का जाल
जा रहा था तुम्हें छोड़
मेरे और अँधेरे के पास
हम दोनों अनुपयुक्त, सिर झुकाए
तुम्हारी चिन्ताहीन नियमित साँस

सुबह

तुमसे मिलने तक
सुबह ठहरी रहती है
अपना उजाला रोके—
फिर एकाएक होती है

असम्भव कार्य

इससे ज्यादा क्या
हृदय की गोदी भरेगी
आँगन में दौड़ती हैं
तुम्हारी हठीली ढीठ खुशियाँ

चिबुक से तुम्हारा चेहरा उठाते
शिला-से क्षण पर शिल्प करते
तुम्हारे नयन रह गए
निकटता बढ़ाते

ये ग्रीक हीरोज़ के असंभव कार्य :
हवा-सी को बाँध लेना
अतीत की घुड़साल को बहा देना
एकाएक हो गए

उसका पक्ष : दाग़

गुनाह लगता है
तुमसे प्यार किया
और एक दाग़
भी न लिया

तुम्हें देना चाहती थी
इतना
देने की आई बात
दिया सिर्फ़—एक दाग़

उसका पक्ष : कृतज्ञता

मैं तृप्त हूँ कि
तुम्हारे लिए कुछ कर सकी
तुम्हारे हृदय को
उस उजाड़ उदासी से
कुछ देर को मोह सकी

मैं तृप्त हूँ कि
मैं हँस सकी
और तुम्हें मेरी हँसी
(तुमने कहा था)
विश्व भर को
वरदान लगी

उसका पक्ष : एक मिलन

आँखें तो मेरे आने पर
व्यंग्यमय थीं—हँसती थीं
चेहरा उदास था
आँखों में मन के विपरीत
मेरे लिए प्रयास था

तुम कई बार रुके
कहते, कड़वी बातें कहते
मुझ पर तो पड़ी थी मिलन की ओस
लापरवाह हो जाते हैं फूल
मैं नहीं सहती थी कुछ
नयन मेरे तो मुग्ध थे

उसका पक्ष : काँपता वक्ष

तुम भोले, उदासीन, बेवकूफ़
फुलझड़ियों की तरह
मेरी दृष्टि से जल जाते थे
और मुझे चुप रहना होता था

तुम्हारी दृष्टियाँ :
मुझ पर बन जाती थीं एक विन्दु
मुझे अपना काँपता वक्ष
सहना होता था

कितनी भीड़ थी हमारे विश्व में
कितनी मजबूरियाँ

उसका पक्ष : जीवन और हृदय

जीवन तो उनका है
जिन्हें यह भार-स्वरूप मिला
माता-पिता का और फिर पति का
जिन्होंने मुझे बदलने की
कोशिश की
जिन्हें अधिकार रहा माँगने का

हृदय तुम्हारा है
मेरे जीवन से जुदा
जुदा उस सब से
जिसे सहना रोज़
समाज ने मुझसे बिना पूछे
मेरा धर्म बनाया

तुम्हारा—
जिसका हृदय
मुझे देखते ही
हर्ष से डबडबाया

उसका पक्ष : तुमसे तुम्हारे मित्र

तुमसे तुम्हारे मित्र
कहा करते होंगे
'क्यों बिगाड़ते हो जीवन
वह तो वहाँ सुखी है
सम्हाल लो अपने जीवन के
लड़खड़ाते कदम—'

कहते होंगे
तुम्हें उदास हो जाते देख,
कहते हैं न?
मैं भी कहती हूँ
मेरे ऊपर निर्भर न रखना
अपने प्यार को मुझसे स्वतंत्र करना
(यहाँ सच कह दूँ—
मैं चाहती हूँ—)
अपने प्यार को मुझसे स्वतंत्र कर
मुझसे छूता हुआ—मुझ पर—रखना

उसका पक्ष : खिड़की के बाहर

मैं तुम्हारे लिए सत्य भी हो सकती
वह खोज भी तुम्हें
मेरी ही ओर खींचती

खिड़की से बाहर
देख रहे हो प्यार
सड़कों का दुख—सड़कों का शोर
मैं हो सकती तुम्हारे लिए
सड़कों की पुकार

किसी ऊँचे पेड़ से गिरती
कल कोई कल्पना तुम्हें
उत्साह में—मुझसे विचलित कर दे
तुम जहाँ पहुँचोगे
वहाँ मैं पहले होती

उसका पक्ष : मुझ पर गीत

मुझे भी लिखना वैसे ही गीत
प्यार की टूटती आवाज़ के
जैसे तुमने
  अपने पहले प्यार को लिखे थे

बीच के गुज़रे वर्ष भुला देना
यदि मेरा प्यार न उठा पाया
वर्षों का कड़ुवा कोहरा
यदि तुम न भूले मेरी चिन्ता में
समय का कलुषित करता स्पर्श
मैं भी न भूल सकूँगी
  तुमसे पहले भी मेरे प्रेमी थे

उसका पक्ष : विश्वास

जब मैं बूढ़ी हो जाऊँगी
जब बचूँगी सिर्फ़ दो हड्डियाँ
पोपला मुँह और झुर्रियाँ
तब यदि हुई स्वतंत्र
स्वतंत्र तुम तक जाने को
प्रिय, सोचो
जब सौंदर्य की घुट चुकी होगी साँस
मैं फिर भी भागती आऊँगी
—स्वतंत्र—तुम्हारे पास

उसका पक्ष : वरदान

जब तुम मुझे न चाहो पास
तब भी मैं रहूँ निकट
छाया-सी सूरज-सी
अदृश्य हवा-सी

तुम मुझको भुला सको
यह वरदान तुम्हारा—जब चाहो

उसका पक्ष : रोज़ सहल

मेरा हृदय रोज़ सहल
भोर की रोशनी की तरह
तुम रोज़ जटिल
भावों की पूनी दूर खींचते
महीन और जटिल

असंभव के खिलाफ़
फड़फड़ाता वक्ष
साँवली देह में
प्रकाश की तरह उगो
मजबूरियों को सौम्य करते
हृदय से आ लगो!

अक्टूबर में विदाई

कुछ देर ही रहेगी
खुशबू तुम्हारी—यहाँ
हवा के हाथ भी
रह जाएँगे खाली

इस जगह था
इतना सौंदर्य—लाल रंग
इतना हर्ष एक हृदय में

असंभव

क्या हैं सम्भव ?
क्या हृदय भरेगा ?
क्या यह मन से गहरा
असंतोष उठेगा ?

मेरी कल्पना में आ जाते
असम्भव-असम्भव कितने !
या उनके बीच बची
सारहीन घुटन
कुछ नहीं बदलेगा
मैं - मन - जीवन

सम्भव तिरस्कृत सारे
और असम्भव असम्भव

टोस्ट

नष्ट करने यह
बीच का समय
हम मिले थे
और एक दिन मिलेंगे
नष्ट करने
सब समय
जो नहीं तुम्हारा
आज का, कल का
या पिछला

नष्ट कर देने...

अनुपयुक्त

तुमने यह बहुमूल्य चीज़
किसे दी ?
एक शराबी
गली की सीढ़ियाँ उतरता
गिर गया

मैं तुम्हारी याद का ताज
कितने दिन रखूँगा
कल्पना पर

तुमने एक दिन
प्यार किसे दिया ?
एक शराबी . . .

बिट्रेएड

तुमने कुछ न समझीं मर्य्यादाएँ
लांछन को सिर्फ़
एक दुख और मान
कभी तुम्हारी भोली इच्छाएँ
और उनसे भी भोला
अपने सरल कपट पर विश्वास
ले गया सीमा के पार
समाज की क्रूर आँखों में
एकाएक प्रकाशित और असहाय

मेरा भी दोष उतना ही हो
तुम्हारे दोष में तो दे सकूँ साथ

सौंदर्य

किसी और का सौंदर्य
तुम्हारे रूप के विपरीत
क्या मुझे मनाएगा ?
पूरी करते हैं बात
तुम्हारी कही हुई
सब प्रारम्भ और अंत
तुम्हारे हैं

अनिंद्य सौंदर्य क्या ?
तुम्हारे लापरवाह हँसने को
चुप किया–सँवारा–बैठा दिया

आउटसाइडर

कुछ ये पागलपन रखना
शासन की छाया में
स्वतंत्रपन
किसी पर कहकहे में हँस सकना
तुम्हें पवित्र रखता
कड़ुवापन

बिलकुल वर्षों से हार न जाना
तुम्हें सोहता असंतोष
पागल बातें सोचना-करना
प्रिय, समाज में बिलकुल
अपनी जगह न पा लेना

आखिर तक रोना झुँझलाना

बरसात

तुमने कुछ क्रूर कह कर
तोड़ा संबंध
रखे नहीं – समाप्त किए द्वन्द

यदि यह मौसम तब आ जाता
प्यार, तुम खिड़कियों पर
मुग्ध रहने वाली
क्या तुमसे वह कहा जाता ?

बिटर स्वीट

एक मामूली ग़लती कर दी
तुमसे हो गया प्यार
फिर बात गई उलझती
आज इतने दिन—
वही बात
मधुर और कड़वी

जिन्होंने देखा कहा
गँवाया यों क्यों जीवन
अपना हृदय हुआ कब फिर
तुमने हँस कर लिया
शायद रखा झुँझला कर

आज इतने दिन—
वही बात
मधुर और कड़वी

कवच

चुप रहूँ या बोलूँ
मेरे पास तक
कोई नहीं पहुँचता
यह अकेलेपन का कवच
तोड़ूँ – कैसे तोड़ूँ

जीवन चारों ओर
स्तब्ध या उफनता
मैं जीवन से बेमेल
अपने तिक्त अहं को
खो दूँ—कैसे खो दूँ

आख़िरी चाँद

यह आख़िरी चाँद
जो मेरे अँधेरे में उठ
डूबने को है
क्षीण पड़ती स्मृतियों की रोशनी
एक दो पश्चिमी बचीं यादें

मन में इस ख़याल का
कुटिल अँधेरा :
अब न घेरेंगी
इतने प्यार से
मुझे कोई बाहें

'बेवफ़ा'

हमें छोड़ कर कितना
चला गया वह समय,
जाना—तुमने जाना ?
तुम्हारे प्रिय शब्दों में,
उस पर लागू-बेवफ़ा!
स्मृतियों को तैराता
कहाँ ले गया,
जाना – तुमने जाना ?

इन्तज़ार में

एक हरा बाग है कहीं
संगमरमर की बाहें फैलाए
जो इंतज़ार में लेटा है
हमें मिलाने

हम कब पहुँचेंगे वहाँ
थक गए फ़व्वारे
पतझर पर पतझर की
पेड़ पत्तियाँ उतारे

शुभ कामना

आकाश फटा अभी अभी
बिजली गिरने की दहाड़
बाग से उठीं घबरा कर चिड़ियाँ
मेरा भी हृदय दहला
जहाँ भी हो
अच्छी तो हो तुम

तुम्हारी आँखें

ये दिन भी क्या
कहीं चले जाएँगे
पीले पतझरों से दबे
विषादहीन - आह्लादहीन

बुझाई हो जैसे
सुबह होने पर
रात भर अधमरी
आशा की लालटेन

वे दो बड़ी बड़ी आशाएँ
तुम्हारी मौन हो गईं आँखें

इतनी इच्छाएँ

इतनी इच्छाएँ
हम लोगों की
एक दूसरे के प्रति,
कुछ न होगा?

समाज की प्रतिष्ठाएँ
बहुत समय से,
ज़्यादा शक्तिशाली
भाग्य उनसे होगा?

यों ही बीतेंगे दिन
हम होंगे धुँधले,
इतनी इच्छाएँ
सिर्फ़ मुरझाएँगी!

जैसलमेर

१.	जैसलमेर	५१	११.	पूर्व की खिड़की	६१
२.	जीवन	५२	१२.	सैल्फ़ नॉलेज	६२
३.	आख़िरी शब्द	५३	१३.	जैसलमेर पर आकाश	६३
४.	अकरुण	५४	१४.	नींव	६४
५.	रोज़	५५	१५.	समर्पित	६५
६.	उत्तर	५६	१६.	जैसलमेर से पोकरन	६६
७.	मेरी सुबह	५७	१७.	मैं सो गया	६७
८.	अधूरा वृत्त	५८	१८.	जैसलमेर (२)	६८
९.	पीले फूल	५९	१९.	तन्द्रा	६९
१०.	रात के पहर	६०	२०.	जैसलमेर (३)	७०

रेत, शून्य, हवा
जीवन था कभी वहाँ
अब उड़ रहा चूरा चूरा

या, यह जीवन के पहले
रूप पा लेने की इच्छा,
वेगमात्र रूप बिना,

विश्व के अंत की राख,
या, समाधि में जीवन,

सीमाहीन नीरवता
कभी हवा का क्रोध
शून्य में गरजता

जीवन

जब हृदय पर कल
मृत्यु का भार होगा
क्या हृदय हल्का बनेगा ?
संतोष की स्फूर्ति देगा?

मैं एक हठीली लड़की के
प्यार में बिगड़ा था
और जीवन भर उस अपने से
अन्-उपयुक्त-सा रहा
मेरा जीवन कल्पना का ज्यादातर

एक खोज है और शायद शांति
शायद खोज ही है
हमें जीवन भर पीड़ा में रख सकने
असंतोष है और अतृप्ति

आख़िरी शब्द

हम पर चमका ज़रूर
एक प्यार का तारा
पर दिशाहीन कर
भटका डाला

एक दो प्रसंग
उत्साह के भी आए
पर विशाल जीवन में
क्या परिवर्तन लाए ?

आख़िरी शब्द ?
ढूँढता हूँ इस
शाश्वत दुख में
कुछ करुणा से अर्थ

अकरुण

मृत्यु के सिवा
क्या किसी अर्थ से
सामना होगा ?
दो मुट्ठी कड़वी राख
जीवन की

सावन में भी
लहर न आई
—ठूँठ खड़े पेड़—
वह दाँतों तक छूती सिहर
झूले के पेंग - सी
हरियाली की

कुछ बात मान लें, ज़िन्दगी
गँवाई जा सकती है, अविरोध
करुण दृष्टि जीवन पर
नहीं किसी की

रोज़

सुबह की चिड़ियों ने कहा
जागे, शायद आज जागे
हृदय ने बड़बड़ाया
आगे – देखो आगे

हर सूनापन भरा दिन
आया कहते यही
और यही कहते गया

उत्तर

सवाल भूल जाना
उत्तर है

अपना शून्य खूब जान
किसी दूसरे पर जीना
उत्तर है

न - जीने का असंतोष
क्यों कि अज्ञात
जो मालूम है उससे
बच न सकना
उत्तर है

सवाल पूछने के बाद
भय से जो जागते देह-मन
उस नहीं - नहीं में
सवाल का परास्त होना
उत्तर है

सवाल का भूलना
उत्तर है

मेरी सुबह

सुबह .. दूर अंतरिक्ष में
ज़रा गहरी छायाएँ—नीलगूँ
धूल के बादल
मेरी सुबह .. बूढ़े शेरों की दहाड़

अधूरा वृत्त

अनुभव का अधूरा वृत्त
इतना ही सम्हाला घर
इसी तरह कुछ कम-पूरे बच्चे
अभिलाषाओं की प्यास रहते
मृत्यु आएगी
स्वागत की सौम्यता आने के पहले
मृत्यु आ जाएगी

पीले फूल

जब धरती पर
बँधने लगीं
घास की नर्म
उँगलियाँ सैकड़ों

तब ही घूम गई धरती

पल्ला छुटा
पागल - सी हवा

मन के विश्वासघात
सैकड़ों

नीली विषयुक्त
झाड़ी के फन में
खिले पीले फूल
सुगंध – संबंध हीन

चिड़ियाँ सवेरे सवेरे
सैकड़ों

रात के पहर

टिमटिमाता तारा
असंख्यों में एक
संख्या से हारा

कोमलांगी चाँद
डुबाने मुझे तुम्हें
प्यार की तरह
ऊपर तैर आया

रात का टूटा खेमा
भावहीन विदाई
एक शीतल लहर में
सुबह आई

पूर्व की खिड़की

एक नया दिन
खिड़की पर रहा दिल
बदले मौसम की सुबह
उठा हूँ नई जगह
आज का प्रकाश भी लगता नया

पर क्या बदलेगा!
क्या होगा नया!
अपने हीन उत्तरदायित्व से
मुझे कौन मुक्त करेगा?

आता रहे प्रकाश
ये पूर्व की खिड़की पर कुछ क्षण
प्रकाश से घुल मिल जाना
सह-विचरण

सैल्फ़ नालेज

पा लेना अपने को
एक संकुचित
गर्व - हीन तत्त्व

यह कर सकूँगा यह नहीं
आदरहीन सत्य
संबंधों में और विलग

पा लेना – और क्या ?
भूलने में सिर्फ़
बाधा के सिवा

जैसलमेर पर आकाश

झिलमिलाता रात भर
जीवनहीन आकाश
उन सैकड़ों सिकुड़े तारों का
व्यर्थ प्रकाश

अच्छा ही है भोर का हाथ
मटियामेट कर दे
रिक्त सूनेपन में उगी इकाईयाँ
प्रकाश के जल से भर दे

नींव

मन हो गया था अशांत
फूटे बुलबुले कुछ देर बाद
फिर वही सूनापन
फिर वही अवसाद

क्या बदलेगा जीवन का ढंग !
मेरी नींव उदासी की
कितने झड़ गए आकर मौसम
मन की बाहें एकाकी ही

सर्मपित

सौ दिशाओं में उड़ा डालो
  सूखा फूल यह मन
आओ बावली हवाओ
  यह सूखा हुआ मन

जैसलमेर से पोकरन

सदियों का चुप चाँद
आज मुस्करा पड़ा
चाँदनी इतनी जैसे
कोई मुझसे बोला

मैं देखता हूँ चारों ओर
कहाँ से कोई
मेरे कड़वे जीवन में
खिलखिला पड़ा

मैं सो गया

ताल के किनारे ही
मैं सो गया
ऐसी हवा चली
गाँव वालों ने कहा था
घास सूखेगी

मैं ताल के किनारे ही शिला पर
सो गया
सागर - सा उठता और
शान्त होता रहा मन
पत्तियाँ कुछ झकझोर
रात भर कहती रहीं
मैं सो गया



जैसलमेर (२)

यह क्या सुना मैंने
सुबह सुबह
आँख खोलते ही–
चिड़ियाँ ?

इस मरुथल में
वसंत आ गया !

कल रात तो थी
वहीं वीरानी
इतना स्नेह अब
हवा में बहा

जैसे खिले हों
खिड़की पर फूल
चहचहा उठीं—
चिड़ियाँ !

तन्द्रा

मन कुंडली मारे
खुली खिड़की से सुबह
अर्थहीन - भावहीन
बस ऊब रह रह

अकेली नाव सरीखी
कल तक की बातें
जातीं मन के पार
धीरे धीरे

इस खाली मकान में
कोई तन्द्रा तोड़ता
काली छोटी चिड़ियों की
धृष्ट आवाज़ें

जैसलमेर (३)

कभी एकाएक बरखा - सी
मन मोड़ेगी स्मृति
जैसलमेर का अटूट चुपचाप
मुझ पर छाएगा

श्रद्धा की झील

१. अपराधी	७३	११. छुटकारा	८४
२. शरण	७४	१२. क्या अवकाश	८५
३. अतीव सौंदर्य	७५	१३. दुख	८६
४. भूरी तरफ़	७६	१४. राम	८७
५. वही प्रश्न	७८	१५. आश्वासन	८९
६. जूठा बर्तन	७९	१६. न्यूमिनस	९०
७. ऐसी सुबह	८०	१७. समाप्त	९१
८. बुद्धानुस्मृति	८१	१८. दिलवाड़ा	९२
९. श्रेय	८२	१९. श्रद्धा की झील	९३
१०. वह पूर्णिमा	८३		

अपराधी

मुलजिम को
कैसा लगता है
जुर्मवार
कटघरे में एकाकी
सब की अवहेलना
या घृणा
जड़ हुआ हृदय
भाव न बाकी

कैसे हो गया था
वह कृत्य मुझसे?
कैसे मैंने समाज की
शत्रुता पा ली?
मेरा भरा संसार
रह गया खाली

शरण

बुद्ध में शरण मिले मुझे
उसने ही मेरे जैसे
किए थे क्षमा

अपने में सब अवगुण
उमर ने दिखाए मुझे
एक के बाद एक - हताश

ज़रा भी कोई
ज्योति न झलकी
क्या मुझमें दिव्य आत्मा थी ?

अतीव सौंदर्य

मैं मूढ़ बड़बड़ाता मरूँगा
उस ही अतीव सौंदर्य की बात
छलनी छलनी हृदय से
जिसकी न जाती बात

नीम की मुँह पर गिरती पत्तियाँ
जाड़ों की धार-सी हवा
शाप लाओ दुख लाओ
मृत्यु ला दो हवा

भूरी तरफ़

उस भूरी तरफ़ नहीं देखना
अपराध पर सीमा है
बाधा रहित सीमा है
पानी पर पड़ा रंग
एक बहती रेखा है
भले बुरे के कटघरे
छाया के पाए मैंने

फिर भी उस भूरी तरफ़
उस डगमगाती मँझधार तरफ़..

उस अनुभव का तीतापन
चूम लो मेरी स्मृति
चूम लो मेरे मन

रह गया धब्बा मन पर
समय असमय लौटता
अपने से जो हताशपन

वह जा कर मिल जाना
विश्व के अपराधियों की कतार में
ठंडी जेल जैसी सुबह

जब अखबारों में छपा जैसा
मन जान लेता अपने को
जो भुला - कभी देर तक
न भुलाया जा सकता

न फिसल जाऊँ उस
भूरी मँझधार तरफ़
जहाँ धार बँटती है
उस भूरी मँझधार तरफ़

वही प्रश्न

मुझमें भी तुमने वही
प्रश्न रखा
मैं – मलिन नाचीज़
खोए हूँ शांति उसी से

दिव्यता से कर मोह
हमने अपने हाथ
जकड़े पाए विश्व से

हर अभाग्य के लायक
मुझमें दोष
मैंने सदा कुछ अक्षम्य किया

आकाश के ललाट की
शांति मुझे दो

जूठा बर्तन

किस झूठी दृष्टि से
अपना जीवन देखूँ
और संतोष करूँ

क्या रहा इन
जूठे बर्तनों में
न सौभाग्य - न कोई प्रण
अन्दर बाहर दरिद्रता

विश्व न हुआ दयावान
और विश्व ठुकरा सकने की
मुझसे गई पवित्रता

ऐसी सुबह

ऐसी सुबह
क्या इच्छा
यदि न पवित्रता

भूल जाते पड़ोसी
कल रात की घटनाएँ
कूजती घनी
निचली हरियाली

कलुषित हृदय
चाहेंगे ही क्या ?
अपने में बार बार
निराशा पा

इस दिवस से पहले समय
क्या इच्छा ?
यदि न पवित्रता

बुद्धानुस्मृति

तुम्हारी कही बड़ी बातों को
तुतलाने का मोह
मेरे मुख में सब अर्थहीन

एक क्षण को हृदय में तेज
धम्म में प्रवृत्ति आसीन

न जाने तुम कैसे थे
ज्योति से भर जातीं हैं आँखें

श्रेय

क्या माप सकते हो पूर्वी आकाश
या तीस हज़ार विश्वों के कण
इतने श्रेय मिले

मैंने दी सब सम्पत्ति
ओह, बड़ा छुटकारा !

मैंने दी दया
और सहानुभूति
मैंने पढ़े बुद्ध - वचन
तथा उन्हें सुनाया

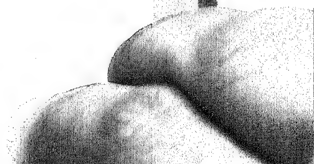
श्रेय—एक दिन मैंने जाना
मेरा नहीं सब का

वह पूर्णिमा

किसी उजड़े नगर, पतझर की
आख़िरी पूर्णिमा
आज भगवान जाएँगे

धन्य है जो दूर से चल कर
वह समुदाय देख पाए
धन्य वे भी जो देर से ही पहुँचकर
पदचिह्न पखार पाए

गाऊँ संघ की महिमा
धन्य वे भी जो आज
उस पूर्णिमा को मन में लाए



छुटकारा

पारिवारिक जीवन कूड़े का घूरा
उसकी राह स्वच्छन्द हवा
मुझे पूरा विश्वास बुद्ध पर

सब छोड़ चलें, क्या चिड़िया के पास
दो पंखों के सिवा

जीवन के अंत तक कह सकूँ
यही जन्म मेरा आखिरी जन्म था

धम्म हो मेरा प्रकाश
धम्म से मेरी शरण
न दूसरी धम्म के सिवा—

क्या अवकाश

ज़हरीले तीर से विंधे तुम
क्या अवकाश पूछने का
मैं कौन हूँ? किधर से आया?

सिर्फ़ दुख, दुख के कारण
दुख से निर्वाण और मेरी
दुख से निर्वाण की राह
इस में शरण लो भिक्खुओं
ज़हरीले तीर से बिंधे तुम

दुख

जन्म से जन्म को जाते
जो बहाए आँसू तुमने-उनका
खारापन ज्यादह है
या चार समुद्रों का

राम

अपना बनाओ राम !
जान चुका सुखों की सीमा
अहं पर जिया जीवन
निकला मृगतृष्णा
तरस से बचाओ राम

नष्ट किया हृदय
धोखों से उजड़ी बुद्धि
देह क्षीण कुरूप
दीन क्षणिक प्राण
अयोग्य को अपनाओ राम

अपना बनाओ राम
क्योंकि दिव्य छाप
खो देता है जीवन
सरक जाती है हमसे
ज्योति की गाँठ
संबंध बनाओ राम

जैसे ग्रहण की
बिंदी बढ़ती है
मुझ में बढ़ो राम
एक दो पत्ती से बढ़कर
वसंत-से आओ राम !

सत्य सब दुहराते हैं
बानरों के मुँह में शब्द

सदा रखना राम
मेरा हृदय धधकता
सत्य से ज्यादा अर्थ
अर्थ से ज्यादा पीड़ा

अपनाओ राम

आश्वासन

सुनी है मैंने तुम्हारे
आश्वासन की बात
कैसे नाम भर देता हृदय

—आँसुओं से भीगा पास्कल
पत्थर के कमरे में झुका

सब इन्द्रियों की प्रतीति
वह प्रकाश बदल देता

वह किसी पश्चिम की
हृदय से गहरी सुन्दरता

न्यूमिनस

सुबह – न्यूमिनस
ज्योति के धुँधले
हल्के परस

साँसों में जान कर सुबह
मैं उठा – आँखें बन्द
हर्ष गुनगुनाता

मेरा – सौंदर्य का
दूर से छूता संबंध

समाप्त

इससे ज्यादा प्रकाश
घेरे में लेगा ?
नहीं होता विश्वास

घड़ी की टिक टिक में
जीवन बीतेगा

ओ ज्योति की चिड़िया
ले जाओ प्राण
असफल हुए प्रयोजन
मेरे और तुम्हारे

दिलवाड़ा

यहाँ भगवान नहीं तो
भगवान की स्मृति है

धूप और छाया भरा
संगमरमर का गर्भगृह

कितने आए गए चरण
श्वास को पवित्र किए
लम्बी यात्रा से धुली लगन

वे इतिहास में छिपे भिक्षु
जिन्होंने सँवारा यह शिल्प
कितनी सुन्दरता से सरस

आरती से पहले
कैसा कोमल अंधकार
इस ठंडे संगमरमर में सो
सुबह उठती सिर नवाए

यहाँ दिव्यता की गंध
अभी शीतलता-सी है

श्रद्धा की झील

झिलमिलाती श्रद्धा की झील
ओ तारों भरे आकाश
पीड़ा में घुल गया हृदय
कुछ दो आस

एक बीमार लड़की

१. विज़िट ९७
२. छत पर बनाए स्वप्न ९८
३. उपहार ९९
४. काली नोटबुक १००
५. विमूढ़ १०१
६. आँख खोलते ही १०२
७. मुस्कराते मौन १०३
८. प्रीमानिशन १०४
९. परी-आवाज़ें १०५
१०. वसीयत १०६
११. आख़िरी इच्छाएँ १०७

विज़िट

ट्वीड के कोट पर
दो पत्तियों का फूल
अस्पताल की
उजाले भरी खिड़कियाँ
सूरज में नाचती धूल

मुझे जो जो कुछ उदासी
जीवन से वंचित होने में
यह तुम्हारी विज़िट का घंटा
तुम्हारी उँगलियाँ तन्मय
माथे पर बहके केश
वापिस लाने में
मुझे जो जो कुछ संतोष
तुमसे छुए जाने में

•

छत पर बनाए स्वप्न

नर्स के रखे सफेद फूल
उतरे टैम्प्रेचर से थका मुख
'कुछ आकाश-सी अछूती बातें
सोच रही थी मैं,'

उपहार

तुम्हारे मुझे इतने उपहार
खाकी भूरे पार्सल
     तागे का तोड़ना

स्मृति में लाती हूँ
आखें बंद कर
अस्पताल में पहुँचे
सुबह शाम दुपहर

हर बार जैसे 'मुझे पहिचानो'
आँखों पर हाथ रख कहता
तुम्हारा प्यार

काली नोटबुक

मैंने तो तुम्हें कभी
प्यार के उत्तर भी न दिए
इस काली नोटबुक में लिखी
न कह पा सकने की व्यथा
कभी-आज-से बहुत दिनों बाद
इस पीड़ा की दिलाउँगी याद

विमूढ़

मन रुकता ही नहीं
आगे हँसी में
निकल जाता
आई वसंत की मूढ़ता

आज तुम यहाँ हो
राजकुमार
धूप बादल चिड़ियाँ
रोशनी से प्रफुल्लित
दरवाज़े खिड़कियाँ

आँख खोलते ही

मन भरा है मेरा
तृप्तियों से
कल शाम तुम आए थे

इस सुबह तक
बंद आँखों का अंधकार
पा लेता है तुम्हें

यहीं कहीं थम जाए
मेरी बीमारी – मेरी उमर

क्या आज सुबह भी
मैं तुम्हारी प्रिय हूँ

मुस्कराते मौन

विवाह के बहुत दिनों बाद तक
बस पसंद था साथ बैठना
उँगलियों का उँगलियों से खेलना
उसकी हल्की सुगंध – बातों का बहकना

हमारे उत्साही शब्द – सब राह चल आए जब
स्मृतियों का अनटूटा छोर
शब्दों के भाई-बहिन दौड़ आए जब
तब बने हमारे वह पहले मुस्कराते मौन
विवाह के बहुत दिनों बाद तक

प्रीमानिशन

हम उस दिन सदा-से
शाम को लौटे थे साथ
मील पर मील ठंडी हवा
बेबी देख रहा था शिकार
मन थके – मुरझाए
सूर्यास्त में छिपता छिपता सूरज

तुमने क्यों कह डाला था-भाग्य
लगता है बीमार पड़ूँ मैं
उसके बाद की भारी रात
उदासी और सिगरटें जीवन भर

परी आवाज़ें

तुम्हारे पत्र की
कुछ मुँह लगी लाइनें
फिर फिर लौटती मन में

—सदा तुम जाओगी
मेरे प्यार का केप पहिने

—तुम्हें प्यार करने की तो
मुझे हो गई बीमारी
—बादलों से भर्राई सुबह
निकम्मा कर छोड़ेंगी सुधियाँ

कल्पना में बटोर कर तुम्हें
मैं ठगी रह जाती हूँ
तुम्हारे पत्रों से परी-आवाज़ें

वसीयत

यह तो मैं चाहती हूँ
तुम मुझे याद रखना
कुछ दिनों तक

पार्टी से बाहर निकल
टेरेस की रेलिंग्स पर आ
दिल्ली को मेरी स्मृतियों से
कुछ देर तक देखना

यह भी मैं चाहती हूँ
तुम्हारे हँसमुख स्वभाव पर
न बनूँ सदा की छाया
दूसरी ड्रिंक में याद कर
आखिरी में भुला देना

आखिरी इच्छाएँ

किसी छाया के ताल में
नाव खुल जाए जैसे
मृत्यु होगी

करुण गीत खोई
आत्माओं का
क्या सब होगा
ठिठुरा ठिठुरा

उस कल्पनातीत प्रदेश में
यदि तुम्हारे हाथ मिल गए मुझे
क्या उनका स्वागत भी
मृत्यु से डसा होगा

एक था राजा

१. यदु और चंद्रा	१११	६. नल दमयन्ती	११७
२. चन्द्रा (१)	११२	७. पुष्कर विहार	१२३
३. चन्द्रा (२)	११३	८. मत्स्यगंधा	१२७
४. बैलड (१)	११४	९. शकुन्तला	१३१
५. बैलड (२)	११५	१०. चन्द्रा (३)	१३५

यदु और चन्द्रा

कितनी कम बची
दुनियाँ में अब खुशी
सिर्फ़ तुम लोगों में ही
यदु और चन्द्रा

आशाओं में अविश्वास
विश्व हो चला बूढ़ा
सूखे दुनिया के फूल—बची हँसी
सिर्फ़ तुम लोगों में ही
यदु और चन्द्रा

चन्द्रा (१)

चन्द्रा, तुम्हारे नाम की एक लड़की से
आज से कई साल पहले
मैं मिला था

हम हो गए मित्र सीज़न के बढ़ते
यहीं मॉल या क्लब में मिलते
हमें क्या मालूम था चारों ओर
गिद्ध से काका काकी थे

किसी ने देखी जात बिरादरी
किसी ने मुझे कहा शराबी
"ये तो अरे प्यार करता है
न जाने इसका चरित्र कैसा है"

फिर क्या—खतम हुई कहानी
खुश हुए काका काकी नाना नानी

इस कहानी से नसीहत लेना
चन्द्रा, जब तुम बड़ी होना
यदि बुलाएँ किसी के लड़खड़ाते कदम
काका काकियों की बजाय
हृदय की सुनना

चन्द्रा (२)

चन्द्रा, तुम्हारे हों ढेर से बच्चे
एक दो नहीं—कम से कम
दस तो लड़के ही लड़के

उन्हें पढ़ाना लिखाना
डाक्टर इंजिनीयर बनाना
और यदि कोई निकम्मा
लिखने लगे कविताएँ
तो चन्द्रा, उसे भी निभाना

बैलड (१)

वही विकेन्द्रित आँखें
शून्य छतरी के नीचे
महारावल राजाधिराज
किस विचार में बैठे

सेना गई पश्चिम?
इन्द्रियाँ सुख से उबीं?
किसी ठाकुर की बड़ी आवाज़?
या वर्षा की कमी ?

या हृदय का विकार वह—
प्रेम है कारण
जिसे ड्योढ़ियों के नीचे
गाते गरीब चारण

महारावल राजाधिराज
छतरी के नीचे निराश
'भाग्य में दूर-दो चमकीले नयन
मुझे कर गए हताश'

बैलड (२)

राजकुमारी की काली भौंहें
भरे तरकश तीर
मुस्कराईं जिधर भी
बिंधी मन पीर

साँझ में जैसे झिल्ली
दिन में आकुल कोयल
राजकुमारी की चर्चा
रस भरी कोमल

गई सहेलियों के साथ
गड़सीसर के पनघट
उमर बदलने की अँगड़ाई
मन की पहली सलवट

'पाँच दीपों का मुकुट
ओ राजकुमारी
सोहे तेरा मुख

हवा में जैसे ठंड
ओ राजकुमारी
मन में बसे सुख'

राजकुमारी उदास
बुर्ज से देखती शाम
यह फैला राजपाट
मेरे किस काम

मुहूर्त्त – शहनाइयाँ
फूलों की लड़ी
राजकुमारी बुर्ज पर
उदास खड़ी

क्या कभी न आएगा फिर
वह शांत सवार
जिसने माँगा था पानी
मैंने दे डाला प्यार

नल दमयन्ती

(१)

जंगल से जा रहा था नल
मिला देवताओं का दल
सजा धजा शान का
जगमगाते साज का

इन्द्र की नल पर गई नज़र
'सुनो देवताओ, आकाश के ग्रह
मुझे एक सूझती बात
दमयन्ती के लिए कठिन होगा
पाना परिचय हमारे ऐश्वर्य का
गणेश की लम्बी नाक का
वरुण के गहरे रूप का
फिर क्वाँरी लड़की की बुद्धि ही तो है
फिर साधारण मानव तरुणी ही तो है
उसमें कहाँ शांति होगी तौलने की
हाथ जयमाला से भारी
उसे कुछ सोचने की सुधि भी होगी'

'इन्द्र, तुम्हारी बात का सुन लिया प्रारंभ
कभी अन्त भी होगा' सूर्य्य बोला

'मैं सोच रहा था अच्छा हो
यदि दमयन्ती को हमारा परिचय हो

वह जान ले ये नाटे मोटे गणेश
जीत चुके हैं देवताओं की रेस

सूर्य के घोड़े किसी और से नहीं सम्हले
चन्द्रमा का सागर पर ज़ोर जान लें'

शनि हँसे, 'कैसे होगा यह इन्द्र'!

'शनि, हमारे पीछे एक युवक आ रहा है
उसके चेहरे पर वही ओज है
जिसकी दूत में हमें खोज है'

देवताओं ने मान ली बात
नल एक लकड़हारा राजकुमार
जो घूम रहा था जंगल में बेगुमान
चुना गया देवताओं का दूत
दमयन्ती का स्नेह झुकाने
नल के भर दिए गए कान

(२)

निष्कपट हंस - सा नल
दमयन्ती तक आया चल
सखियों की हँसी के बीच
नल ले गया अपने को खींच

'आप हैं दमयन्ती राजकुमारी

मुझे सुनाना है रूप-गुण-कर्म का लेखा
उन देवताओं का जिन्हें न आपने देखा
मैं आया हूँ सरल करने
आपका कल का काम
उन जगमगाते देवताओं में से एक
अपना प्रिय वरने'

सखियाँ बैठ गईं आराम से
नल बोला था इतने शील से

दमयन्ती देख रही थी नल को
नल जैसे कोई उत्तर हो

नल बोला इन्द्र सुरेश्वर
उनका वज्र - सा कर,
ऐरावत पर चढ़ गई कल्पना
सखियों के झुंड ने सुन लिया
दैत्यों का उत्पात और हारना

नल ने वरुण की कथा कही
अनन्त दिशाओं में बही
मणियों की लगा दी गणना
अथाह हृदय की कल्पना

सुख-वदन गणेश को सराहा
शून्य मन शनि को सजाया

चन्द्रमा के मृदु साज पर बोला
चाँदनी - सा मोह खोला

दमयन्ती के निर्निमेष रहे नयन
नल की बातें इतनी रूपवती थीं
इतने मनोहर थे उसके वचन

'दमयन्ती राजकुमारी अब दो विदा
मेरे ख़याल में मैं सब कुछ कह चुका

तुम्हें सौभाग्यशाली हो
स्वयंवर का समय'

'रुकोगे कल तक तो न? भूल जाऊँ
किसी का कोई गुण तो, सुझा देने'

'अच्छा मुझे भी कुछ कौतूहल है
तुम्हारा कल का कार्य मुश्किल है'

(३)

लम्बा चौड़ा था दरबार
पंक्ति पर पंक्ति उम्मीदवार
एकाएक हुए अभिमान भरे शब्द चुप
कलह कोलाहल चुप

हंसिनी सी आई दमयन्ती
धीमे कदम
रूप के बोझ से दबते
ग्रीवा झुकाए दमयन्ती

तन गए वक्ष, स्मित की बढ़ गई माँग,

दमयन्ती के कदम बढ़ते
देवताओं को छोड़ साँस भरते
नल ने सोचा फिर लौटेगी
आ गई पास कुछ पूछेगी
दमयन्ती के ऊँचे उठे हाथ
जयमाला के भार के साथ

मूढ़-सा होता नल का हृदय
एक स्मित से हो गया सरस
ठंडे फूलों का परस

(४)

देवताओं को राह में कलि मिला
'आप लोगों का दूत ख़ूब निकला!
सब हारे लौटे जा रहे हो
लिए बिना बदला'

देवताओं पर चढ़ गई मंत्रणा
पहुँच गए अदृश्य हो सब
जहाँ नल और दमयन्ती
पहुँच रहे थे तब

नल दमयन्ती बैठ रहे थे
साधारण से जीवन में
दिन रात के घेरे में
जब देवता कुटी से कान सटाए
ये बातें सुन पाए—

'मन के वैभव भी विचित्र हैं
देवताओं को छोड़ मुझे चुना!
बतलाओगी दमयन्ती क्या हुआ'

'मैं राजप्रासाद में आई
स्मृति बार बार सहलाई
पर इतने खड़े देवताओं में
न किसी को पहिचान पाई

पहला इन्द्र था क्या ?
तुम्हारे ऐश्वर्य का बखान
मुझे आया ध्यान
और वह अकड़ा देवता
रह गया सिर्फ़ फूटे गर्व समान

वरुण नहीं लगा गम्भीर
याद कर तुम्हारी बातों का क्षीर
हर देवता अपने से कम था
तुम्हारा चुप - सा चेहरा
ज्यादा कह चुका था'

नल ने नहीं की थी निन्दा
देवता गए शर्मिन्दा

पुष्कर विहार

अरावली पार कर
आए पुष्कर
विश्वामित्र ने देखा
मरुभूमि में खिला
एक नील कमल
मग्न शिशु-सा चंचल
और शांत ताल पुष्कर
ऋषि गए ठहर

शंख - स्वर - से प्रभात
सिहराते गात
चँवर डुलातीं शाम
देतीं विश्राम

हर दिन ऋषि अधीर
करते साधना गम्भीर
आज जिस सत्य पर आते
कल उससे बढ़ जाते
अग्निशिखा-सी लगन
ध्रुव - सा स्थिर मन

फेरा कर आया वसंत
हुआ कृश शिशिर का अंत
पर ऋषि का नियम आचरण

अन्यमनस्क अंतःकरण
न जान पाया कुछ हुआ नया
दूर सत्यों के पीछे गया
ऐसे तेजस्वी की यह घोर अवज्ञा
सामान्य प्रकृति का अपमान हुआ

एक धुँधले सवेरे
तोते रहे पुकार
ऋषि ने नयन खोले
और देखा मेनका को
रूप से भरे द्वार

स्वप्न नहीं साक्षात
पूर्व में रजत भोर
एक नया उदय
एक नया प्रभात
मेनका मुस्कराती उनकी ओर

जैसे गिरिराज के शिखर
हिम से दब जाते हर शिशिर
पर वसंत से डाँवाडोल
हिम हिल उठता—हृदय खोल

उत्तुंग शिखर मुस्करा कर
स्वच्छन्द करता निर्भर
मेनका ने यों किया चंचल

विश्वामित्र का हृदय भरा रहता था
जैसे जल से ताल
एक आनन्द में उड़ा रहता था
बड़े डैनों का मराल

मेनका बनी हृदय का हार
एक वर्ष गया करते विहार

एक रंगव्यूह में फँसी शाम
ऋषि के चरणों में
मेनका झुकी रही कर प्रणाम-

'मेरे हृदय में दाह सा जलता है
एक तुम पर किया कपट
लौट आती वह सुबह फिर!
मैं आती तुम्हारे पास
न किसी की आज्ञा से
अपने मन की मंत्रणा से'

'बार बार वही पश्चात्ताप क्यों
उठाती हो मेनका यों
मैं तो तुम्हें दे चुका अभय
न मुक्त होते तुम्हारे संशय
तुमने मुझे नहीं गिराया
जो भी हो मूढ़ इन्द्र की माया
मुट्ठी में ले ये केश दुहरा दूँ
या इस मुख की प्रतिज्ञा दूँ—"

'क्यों, मैंने नहीं दिया तुम्हें साधारण
अपूर्व तेजस्वी तुम—'

'छि: क्या साधारण है प्यार
या यह पुष्कर विहार

क्षितिज तक भर जाता सुख
जब प्यार में उठता मुख
उस क्षुद्र इन्द्र सभा को भूलो
इस पुष्कर में परछाईं लो'

'ऐसी ही दीन है तुम्हारी मेनका'

'मैं कुछ बनाऊँगा नया
प्रतिष्ठित कर दूँगा सत्य
आदि है यह और भूला हुआ'

बूढ़े बड़बड़ाते पंडों से सुन लो
मोटे मच्छों को चने डालते
पुष्कर राज की महिमा
विश्व की एक जगह जहाँ
प्रतिष्ठित हैं ब्रह्मा
मोटे मच्छों को चने डालते

पर मेनका ने भी तो
सत्य लिया था अपने में
जब विश्वामित्र गए उत्तराखण्ड
मृणालिनी नदी के किनारे
जन्म दिया था शकुन्तला को

मत्स्यगंधा

एक धीवरों की कन्या
नाम से मत्स्यगंधा
एक शाप से त्रस्त थी
उस रूपसी को चारों ओर
अप्रिय घनघोर
गंध घेरे रहती थी

इस बंदीगृह में उसकी
युवावस्था घुलती घटती
अकेले नाव पर बेचैन
वह बिताती दिन रैन
साँझ सवेरे पाल चढ़ा कर
स्वर्णप्रभा के विशाल वक्ष पर
चली जाती वह दूर दूर

नदी की बढ़ी लहरें
शिशिर में होतीं शांत
ग्रीष्म के घटते तट
फिर पा जाते प्रांत
एक मत्स्यगंधा का हृदय
निराशा में रहता लय
वंशी सा उसका स्वर
कभी गा उठता हृदय भर-

'भाग्य ने मुझे क्या किया
मछली होती या कन्या

यह एक का शाप दूसरे पर
मुझे उठाना जीवन भर

स्वर्णप्रभा सहेली
किस किस के व्यापार
तुमने लगाए पार
मुझे अकेली
तुम न ला सकीं प्यार'

खोल रखे थे बाल
रूप का मछुआ जाल
मत्स्यगंधा ने
स्नान के बाद सुखाने
एकाएक उसे ज्ञात हुआ
उसका एकान्त टूटा हुआ
किसी ने चरमराया था पाल
दिशा बदलने के खयाल

चकित बैठी रही निरुपाय
भय से असहाय
पद - स्वर उसकी ओर
लाए एक तेजस्वी युवक
रह गया जो मत्स्यगंधा पर
नयन डाल——ठिठक

यह देखते देखते रहने का क्षण
बढ़ता जा रहा था हर क्षण

मत्स्यगंधा ने किए श्रवण
ये कमनीय वचन

'मुझसे भूल हुई देवि
मेरा उद्दण्ड स्वभाव
मान बैठा था ये भी
मुझसी भटकी नाव
बचपन से प्राण है मेरा
तोड़ना लहरों का घेरा
देखना नदी पर बैठती शाम
उठता श्वेत सवेरा
अब कहीं दीजिए उतार
किसी तट – किसी कछार'

नाव निकल चुकी थी
स्वर्णप्रभा के बीच
युवक ने वापिस मोड़ी
पतवार खींच

उतर चुका था युवक
तब पूछ पाई रुक रुक :

'आपको मेरे पास बैठे रहना
असह्य रहा होगा सहना
ये विषैली—"

'असह्य ? हाँ था
तुमसे अजनबी रहना

सैकड़ों वसन्तों ने जमा की हो
एक देह में अपनी सुरभि को
ये मुझे लगा—"

'सुरभि ? सुगंध !
मेरी तो है घृणित दुर्गंध
मछेरे मछलियों की'

युवक ने उत्तर में आ
मत्स्यगंधा के केशों को
मत्स्यगंधा को सूँघने दिया

जैसे चंदन का चूरा हो
देवस्थल में जलता
या माधवी का लाल पुष्प
दक्षिण में हिलता

रो पड़े मत्स्यगंधा के नयन
उसका शाप टूटा !
राह पर गिर राह रोक—कहा :

'तुम कोई हो भटकते राजकुमार
कहाँ ले जाते हो मेरा सौभाग्य
मान लो मुझे नाव का मूक भाग
स्वर्णप्रभा पर सातवीं पतवार !
हृदय में तुमने मुझे किया प्यार
एक ही क्षण को शायद
क्योंकि वही मंत्र-किसी पुण्य हृदय में जाग,
मुझे दे सकता था निस्तार
साक्षी मेरा उद्धार'

जिन्हें मेरे अलौकिक आख्यान पर
होता हो संशय
वे देखें स्वर्ण प्रभा पर
सूर्य्यास्त और सूर्योदय

शकुन्तला

(राज्य कर्मचारी, प्रियंवदा, दुष्यन्त, शकुन्तला, कण्व की ध्वनियाँ)

(१)

'क्या देखा है कहीं
तुम लोगों ने
शिकारी राजा दुष्यन्त
हम उसके कर्मचारी हैं
जिस तरफ़ मन का हिरन
कुलाँच जाता है
धनुष की टंकार दे
वह उसी तरफ़ जाता है-'

(२)

'चलो बच चलो शकुन्तला
आज जंगल में हलचल है
समाप्त कर लें खेल
तेरे रूप की शांति तो
बाँध देती है
जैसे तालाब का तट
तालाब को
नहीं पछुवा के दिन
पर पश्चिम के पेड़ हिले हैं'

(३)

'मैंने आज तक अपना
अहं बना रखा

जो करना चाहा किया
मन के कदम हटाना पीछे
नहीं सीखा
मैं बेंध देता हिरन को निश्चय
निशाना तुम्हारे रूप ने हिला दिया'

'स्वागत दुष्यन्त
राजप्रासाद के आनन्द
इन खुली हवाओं में खिल जाओ
ये मेरी पुत्री है
अभी इसके वर्ष नहीं बने गम्भीर
इसका जीवन नई नदी है'

(४)

'ले आया हूँ तुम्हें यहाँ
मन इन दिनों भरा भरा रहता है
न रखो मुँह पर हाथ
कम होता चन्द्रमा
न गिराओ मुझसे आँख
अपने से ही खेलेंगे. तुम्हारे हाथ?
जिस जीवन से मैं रथ में आया था
उसमें न लौटाओ
मैं तो बनना चाहता हूँ
सुगंध तुम्हारे आस पास'

'तुम्हारी बातें हैं कहानियों-सी
मन को रखतीं बँधा
एक मेरी सी बेवकूफ़ झूठ को
क्या दे देतीं रूप!

तुम्हें मनमानी की आदत है
भक हो गई मेरी अद्वितीयता की
मुझसे माँगते हो इस स्वर में
जैसा बड़ा भारी देना हो'

(५)

'मेरे साथ चलो शकुन्तला
ऐश्वर्य से खेलना
हम जब निकलेंगे साथ राजपथ पर
उभड़ती भीड़ को देखना'

'यहाँ तुम्हारा मुझसे ही संबंध है
वहाँ होंगे बहुत
मुझे अकेला लगेगा
मैं खड़ी रहूँगी वसंत के जाने पर
खुली बाँह के पेड़-सी
तुम्हारी स्मृति मुझमें है
और इस शांति में बढ़ेगी'

'पहिन लो अपनी उँगली पर
ये कहानी सी निशानी
इसका नग अदृश्य है शकुन्तला
हमारे प्रेम का मोती'

(६)

'मेनका की तरह
शकुन्तला ने वह किया
जो मन के इन्द्र ने कहा
मुझे यह रहस्य मालूम है'

'शकुन्तला के पुत्र जन्मा
चाँदनी का चन्द्रमा'

'यदि दुष्यन्त इस से मिल पाता
अपने ऐश्वर्य की पूर्ति पाता
फिर नई कहानियाँ कहता
दुष्यन्त के सुख-अनुभवी मन में
एक नया आनन्द होता'

(७)

'खो गया फिर
हम लोगों का राजा
मन का निकल गया तीर
वह वैसे ही अधीर'

(८)

'खोल लो मेरी उँगली से
वह कहानी-सी निशानी
मैं तुम्हें लाई हूँ सत्य
तुम्हारे स्वप्नों का
मन से नहीं डरने का
तुम्हें गए हुए कितने बरस
ये मेरे साथ खेला'

'तब चलो राजप्रासाद में रह सकेंगे
हमारा संबंध अब निडर बन चुका
हम अब इसे बहते देखेंगे

चन्द्रा (३)

डार्लिङ्ग—अब हमारा सुख यही
देख पाना तुम्हारी ज़िन्दगी सुखी

दो बड़बड़ाते बुड्ढे तुम्हारे पिता और मैं
कुछ देर ही यहाँ पिएँगे—और हैं

समूह

१. समूह १३९
२. शत्रु १४०
३. हमारे लिए १४१
४. भाग्य १४२
५. मातादीन १४३
६. टाइपिस्ट १४४
७. पत्थर १४५
८. प्लैन्स १४६
९. मिंग वाज़ १४७
१०. एक मीरा १४८
११. रामकली १४९
१२. एक चन्द्रा १५१
१३. उत्पादन के रिश्ते १५४
१४. एक पिता १५७

जिस समय हमारे समूह के ऊपर
किले की दीवार पर बैठे
कबूतर उड़ पड़े—सुबह में छायाएँ थीं
और एक सुनहली चेतना

इतना शांत विश्वास समाया था
हम ठीक हैं—यही राह है
कबूतरों के झुंड के साथ
हमें ज्योति के पंख ने सहलाया था

शत्रु

जब तक हैं
मुँह चिढ़ाएँगे—समाज
हमारा अंत कर दो
हम बहुत हैं टोली में
कुरूप, विकृत, असफल
अतृप्त, बदनाम, अपराधी
जिन सब की असंभव इच्छाएँ थीं
बाकी जीवन भर
कड़ुवापन बढ़ाएँगे

हमारा अंत कर दो

हमारे लिए

गाँव की लड़की
क्या लाऊँ तेरे लिए ?
दूसरी धोती

गन्दे मुँह बालक
क्या लोगे तुम
जीवन का पहला स्वेटर

पर इतने हैं हम
(बढ़ती जनसंख्या
प्रगति में बाधा)
लाना कुछ सस्ती-सी चीज़
मौत या प्यार जैसी

भाग्य

जिसे पसंद था
रंग विरंग - उजलापन - हँसी
जिसकी इच्छाएँ थीं साधारण
अकलुषित और तीव्र-सी
हृदय का सदा पूरा खिला फूल

उसे दिया
करुणाहीन परिवार - शक्की पति
बीमारियों से घुली देह
रहने को बिजलीहीन दूर गाँव
एक रईस घर में बदनसीब

मातादीन

मातादीन चपरासी
पी० डब्लू० डी० का गैंग
पोकरन रोड पर
अढतालीसवाँ मील
तीसरे दिन माता गई
कूटने पत्थर

—इसीलिए मुझे
खड़ी धूप से डर

मचिया डाले सोना
रात को खखार खखार
हुकुम हज़ूर - बीड़ी
घुड़की दुनियादारी

गाँव से पोस्टकार्ड
वैवाहिक जीवन
तारों पेड़ों का पार्श्व
मूक मन

टाइपिस्ट

मुँह कुछ साँवला
और कुछ उड़े से बाल
(बड़े शहर का धुँआ
उज्ज्वलता किए म्लान)

मैं अब न पहिचानूँगी
अपने जीवन के पहले तीस वर्ष
कॉरिडर में
गंदी बातों से बचते गए

हफ्ते के अंत में
एक मार्निङ्ग शो
फिर झंझटों में वह भी नहीं
तीसरी मंज़िल में क्यूबिक्ल
रोज़ क्लार्कों की हज़ार साइकलों में
मेरी भी साइकिल

पत्थर

पत्थर के बने मकानों में
कुछ ज़्यादा शांति रहती है

बुहारी के बाद
पत्थरों के चेहरे
कुछ ज़्यादा साफ़
कुछ ज़्यादा सीधे

ईंटों के मंदिर
या शिवालय !
मेरे खयाल से
भगवान
पत्थरों में ही आते हैं

फिर पत्थरों का मकान
कुछ प्रकृति का भी बना होता है
ईंट तो सिर्फ़

मनुष्य का सूखा
टुकड़ा है

प्लैन्स

भविष्य का सबसे भीषण स्वप्न
सिविल सरवैंट्स का फैलता धब्बा
सब कुछ माँगने पर—राशन्ड
स्वार्थ की बढ़ती आवश्यकता
(अथवा अंत)

मिंग वाज़

किसी भी टूटे हृदय का मिंग वाज़
किसी भी मजबूर की जली आँखें
(आकाश में नए ग्रह की चमक)
कोई भी असंतुष्ट, विकृत, मोहताज
इतिहास में इस समय की निशानी छूटे

एक मीरा

मुझे काफ़ी नहीं हैं
अस्पष्ट-से, अतृप्त स्वप्न मेरे
कुछ तीक्ष्ण माँगते प्रतिदान अक्सर

समृद्ध गृहस्थ, पनपता घर
ठीक है, पर
मुझे काफ़ी नहीं है

चाँदनी की ढलती सतह
क्या युवराज प्रेमी का प्रणय
रख देगा मुझमें कुछ खोल कर
एक गाँठ मुझको कचोटती रही है

मुझे जिस सबने घेरा है
जिस सब की मैं, जो सब मेरा है
मुझे काफ़ी नही है

रामकली

लोई-सा तन
ब्याह के समय का पाजेव
एक चिटका विवाह
उसे लाया हमारे घर
छोटे बच्चों की आया
गोल बड़ी बिन्दी
मुँह खिलाती
'जल्दी दूध पीलो'
व्यस्तता जताती
रात भर मथते रहे—
—मन की यंत्रणा
साल के पेड़
खिड़की के बाहर
उन बचपन के दिनों पर
बारिश का कोहरा-सा
लाल पगड़ी पहने कालीदीन
सरवैण्ट्स क्वाटर में ऊधम
लम्बी पंचायती बातें
ढोल-महुआ-चिलम
मेमसाब से विदा माँगते
दूसरे घर जाती बहू रामकली
ब्याह के पहने पाजेब

कहीं चाटवाले की पत्नी
चार बजे से काम-धुएँ की कोठरी
दूसरे वर्ष गोद में क्षय
'भैया अस्पताल का पता लिख दो'

एक चन्द्रा

शराब पीते पीते दो अधेड़ों ने
हाथ मिलाया पक्की कर ली बात
गाली देने से जवानी जाती जाग
यदि तेरे लड़का हुआ और मेरे लड़की

कालेज में चन्द्रा बहुत हँसती थी
बचपन में चाचा जी के यहाँ
एक स्मार्ट - से लड़के ने कहा
यह हमारी बहू है हमसे शर्माएगी
फिर वह गोली खेलने चला गया

अब हम पति पत्नी हैं
मैं और जोगिंदर
मेरी शिकायतें :
अलग क्यों नहीं बसाता घर
सनी होने के दिन
कहीं बम्बई था
ये शराब की बड़ी बड़ी पार्टियाँ
मुझसे पूरी न हुई साध उसकी

मुझे क्या बचा
छोटे छोटे विरोध

कमरे में सिगरेट पीना
नौकरी कर लेना
लेडीज़ होम जर्नल कितना ही कहे
मुझसे पूरी न होगी साध उसकी

मेरी भी तो साध पूरी न हुई
आदर आश्वासन कहाँ मिले
मुझे कोई बनाए बड़ा बड़ा बड़ा
मैं जिसके सामने संकुचित होती जाती

दो बड़ी बड़ी भूरी आँखें
हड्डियों के चेहरे में उसके
चन्द्रा चन्द्रा

रूप को तो गर्व चाहिए
ये आश्वासन माँगती शर्माएँ
चन्द्रा चन्द्रा

दुबली-हल्के बाल
विफल डाँटती घर के कुत्ते को
मिलें तुम्हें परियों के देश
ओ भीगी स्पैरो
चन्द्रा चन्द्रा

अजमेर बरसात के पहले
बरसात के बाद

चारों तरफ़ जले टीले
उतरा अन्नासागर
दिन भर आँच-सी भागती हवा
कहाँ जाए शाम को

देखते देखते तारों ने भरा आकाश
बादलों ने बदल दिया अजमेर

आ गई सड़कें
बादल पहिने
पहाड़ों के नीचे
हरदम छलकता मौसम
शहर की कहानियों-सी बत्तियां
रहस्य-सा बढ़ता अन्नासागर

बेकार अयोग्य फूहड़
सदा सदा ठंडा घर
न रुचि न रहस्य
मुझे तो नींद आजाए अच्छा हो
कोने हिस्से भीगते जाते ठंड में
दूसरों के घर की ओर
दो प्रश्न चिन्ह-सी जलती खिड़कियाँ
ईर्ष्या का सदा रहता हल्का ज्वर

कूचों और गलियों में प्रेम की बास
चुस्त हो गए हैं स्वप्न हर तरफ़
चौंसठ पेज में से कापी का एक पेज
डाकिए के भरे थैले
हिन्दी अंग्रेजी में बड़बड़ाते उच्छ्वास

मेरी, न उसकी, पूरी हुई साध

उत्पादन के रिश्ते

उत्पादन के रिश्ते
व्यक्ति के प्रकृति से स्वतंत्र
प्यार के नहीं पगार के
जिनसे पूँजी का बढ़ता ज़हर

प्रकाश और प्रकाश
जीवन और जीवन
पद द्रव्य के अवतरण के बाद
प्रगति की दिशा
पूँजी और पूँजी

उत्पादन के रिश्ते
व्यक्ति से बना समाज
प्यार से नहीं पगार से
आदरहीन को आदर
एक दूसरे में सुख नहीं
ज़रूरत
बड़े आफ़िसों फैक्ट्रियों का
घुटता सामीप्य
समाज व्यक्ति की शक्ति नहीं
बाज़ार

उत्पादन के रिश्ते
प्रकृति की सत्ता का
सबसे सम्पूर्ण उपभोग
इतिहास की दिशा
मार्क्स सोचता था

अपनी शक्ति के पूर्ण
उत्पादन के बाद
खुद ही हो जाएगा
विध्वंस पूँजीवाद

पर उसका दूसरा आवाहन
मिलो विश्व के कर्त्ता
वंचित मज़दूर
तुम्हें खोनी सिर्फ़ जंजीरें
पाने को है एक नया विश्व

मार्क्स की गढ़ी घृणाएँ
आज भी क्रांति की शक्ति
हमारे गिरते युग को
आ गई चेतना शायद
सहारा पा गए लड़खड़ाते कदम

(टायनबी का कहना
सभ्यता को पहली बार
अपने ह्रास की चेतना)

उत्पादन के रिश्ते
एक की बजाए दूसरे
वही व्यक्तियों का
स्नेह-रहित संगठन
फैक्ट्रियाँ मज़दूरों की हो जाएँ
मज़दूर रहेंगे फैक्ट्रियों के

कर्त्ता का कार्य से संबंध
उल्लास मय विकास मय
मज़दूर की मशीन पर विजय

व्यक्ति समाज का
संतोष से अंग
उल्लास मय विकास मय
उत्पादन के रिश्तों में हृदय

एक पिता

मेरा साम्राज्य प्राविडेण्ट फंड की कृति
मेरा मकान खाली है दोनों मंज़िल
सदा खाली ही रहा
लड़के दूर लग गए
खाँसता सस्ता माली
उद्दण्ड होता नौकर
यह स्मारक ही बना
मेरे इतिहास चाहने का
स्मृतियों की धूप ढल गई

किस के घर जाऊँगा इस शिशिर
स्नेह का बुलावा-पत्र में आखिरी लाइन
बच्चे याद करते हैं
ज़रूर आइएगा
सम्मानित अतिथि
ज़रा जीवन की राह में
मेरी मर्य्यादा भय है
कभी भी अशिष्ट हो जाए समय

एक संतति सिर्फ़
बाकी कुछ स्मरणीय नहीं
अपने पुत्रों को ही दिया

दिया क्यों कि हृदय भरता था
मैं हूँ असहाय, खाली खँडहर
वाणिज्य सरका, पुल टूटा
साँझ तक जाते पिकनिकर्स दिल बहला

साठ वर्ष के बाद
असम्भव नए नाते
चुक गई हृदय की डोर
अखबार, चश्मे का केस
होली, दिवाली, समय पर दिए टैक्स

धूप में दूर दूर तक
गिरे शहर चंद्रावती के खँडहर
सूरज ही पुकारता इन्हें अब
सूख गई नदी, गई समृद्धि सब
शाम को लौटता बकरियों का झुंड
दोनों तरफ़ टीले-मंदिरों की नींवें-पत्थर

साँझ ही फूलती है
एक पश्चिम का फूल ही
इस गिरे ईंटों के वीराने में
राह बदल देता है जीवन
कहीं और—किसी और में
हमसे संबद्ध इतिहास
एक अस्पष्ट आभास
जीवन यही था हममें उनमें
एक चेतना का बिंदु-समय और स्थान

मैं छूटी पगडंडी हूँ
कहीं और चले गए चरण

मुहूर्त्त

१.	मुहूर्त्त	१६१	२१.	सहसा	१८१
२.	चाँदनी रात	१६२	२२.	कल !	१८२
३.	फ्रैक्चर्ड स्वप्न	१६३	२३.	नो रिग्रेटस	१८३
४.	कोई तो आकाश	१६४	२४.	हँसी	१८४
५.	यात्रा का अंत	१६५	२५.	साल गिरह : १९५९	१८५
६.	दूधिया सुबह	१६६	२६.	बाकी	१८६
७.	कहा था	१६७	२७.	खुशी	१८७
८.	इंतज़ार	१६८	२८.	लाज	१८८
९.	वर्षारम्भ	१६९	२९.	दुबारा	१८९
१०.	विदाई	१७०	३०.	पहली बार	१९०
११.	प्यार के शत्रु	१७१	३१.	बेवकूफ़ी	१९१
१२.	दिदधू में शाम	१७२	३२.	स्वप्नों के हंस	१९२
१३.	एतराज़	१७३	३३.	सरकिट हाउस : जोधपुर	१९३
१४.	सितम्बर	१७४	३४.	एक शाम	१९४
१५.	मार्च की रात	१७५	३५.	क्यों	१९५
१६.	अगले साल	१७६	३६.	घाटी के शोर	१९६
१७.	रोड साइड	१७७	३७.	खारापन	१९७
१८.	ट्रंक काल	१७८	३८.	यहाँ	१९८
१९.	अचेतन	१७९	३९.	राह का बाग़	१९९
२०.	कारण	१८०			

मुहूर्त

उसने कहा
कुछ देर में चाँद
खिड़की से निकल जाएगा

ये तुम्हें देखने का
——वसन उतार डालो
मुहूर्त्त निकल जाएगा

चाँदनी रात

तुम्हारी दृष्टि देख हँस देते
करवट में बादल
हवा का महीन रेशम
फिसलता विश्व पर

फ्रैक्चर्ड स्वप्न

यही तो स्वप्न था
कार में आओगी
मेरे न मानते न मानते भी
पुराने क्रोध की बात के बाद
सदा रहेंगे साथ
जैसे तटों में बँधी
खोल दी जाए नाव

कार में कल कोई आया था
एक फ्रैक्चर्ड स्वप्न

कोई तो आकाश

क्या इतनी इच्छा
देह तक ही रह जाती
कोई तो आकाश
हिलता होगा इस से

यात्रा का अंत

यात्रा समाप्त हो गई
पर खड़खड़ाते रेल के पहिए
चलते जा रहे हैं
कल कहाँ उठूँगी

हृदय से हुई लापरवाह
आँसू और हिचकियाँ
चलती जा रही हूँ
कल कहाँ रुकूँगी

दूधिया सुबह

दूधिया सुबह
    कमरे में होती घनी
कहाँ तैर गए
    मेरे नरम खयाल

जहाँ समय का पानी
    ताल बन गया
तैरते रहें मेरे खयाल
    तुम्हारे ही संदर्भ पर

कहा था

जंगलों में जैसे
खाई–याद
हरिण-सी

यह समय
पक्षियों के
पश्चिम जाने का
कहीं से झुंड उठा
स्मृतियों का

आकाश फलाँगती बात
तुमने मुझसे कहा था
—आऊँगी तुमसे
जाड़ों में मिलने
जब सुबह सिहरी होती है
सद्यःस्नात

इन्तज़ार

सब काज रख दिए
—जब तुम आओगे
हृदय अकर्मण्य
मुँह छिपाने का कोना भर
जीवन दे दे तब तक

मन प्राणों से सब
मैं हो जाऊँ चुप
हमारे बीच का अंतरिक्ष
तरंगित
हो जाए स्थिर
क्या सुन सकोगे यह कसक
यह अनकहा अकेलापन

क्या मैं याद आया
कितनी बार
सच बताना
इस सूने कमरे की शपथ
मैंने तो ली साँस
तुम्हारी ही स्मृतियों में

वर्षारम्भ

पेड़ कैसे झुक झूम रहे
जैसे किसी ने खेल खेल में
इन्हें हँसा दिया हो
ना ना करते
इधर उधर बचते

पत्तियाँ करतीं नहीं नहीं
चीर खींचती हवा गई
फिर सबने अपना हृदय
खोल दिया वर्षा को

विदाई

ले लें इन आखिरी शामों की
उदास-सी सुगंध
मेरे साथ चलने में
झिझकते हैं तुम्हारे कदम
कल जब तुम मेरे मित्र भी न रहोगे...

प्यार के शत्रु

शिकायत करूँ तो क्यों
वह वह है मैं मैं
प्यार की इकाई में बँधे
हम बचे रहते दो

दोनों को प्राप्त हैं अपने
विश्व करीब करीब पूरे
हम जी सकते हैं—जी चुके हैं
जीवन अधूरे

हमारा धैर्य—हमारा अनुभव
प्यार के शत्रु ये

दिदधू में शाम

दिदधू के पश्चिम
ओरन की बाँहों में
ताल - सा क्षितिज
एक सलेटी गोधूली
छा गई हृदय पर

कितने दिन जुड़ आए
मेरी आँखों में उस शाम
तुम लोग कहीं गए थे
सरसराते थे पेड़

एतराज़

इसका एतराज़ नहीं
जीवन न बना संस्कृत
रहा फूहड़
आदतें न सुधरीं
रहे आवारा
गुणों का मूलधन
खर्च कर मारा
तुम मिलतीं तो ये सब
शायद बिगड़ते नहीं
पर इसका एतराज़ नहीं

तुम्हारी ज्योति के अलावा
मामूली मंगलमय जीवन-
की इच्छा मुझे हुई नहीं

सितम्बर

भीगा सिर
सुबह की हवाएँ
ठंडे न्हाए हाथ
दौड़ जाते देह पर

देह से बँधा मन
उड़ जाता उड़
सुख की छोर पर
डगमगाता

मार्च की रात

रात भर कभी कभी
एक सूखी पत्ती
छत से टकरा कर
बरामदे से बहती
मार्च की हवाओं में
गुम हो जाती थी

हवा की मरोड़ - दौड़ - फिसलन
मैं राह जोहता
कब गिरेगी अगली पत्ती

कोमल सलेटी चाँदनी
खिड़की में - एक चित्र - सा
पेड़ का द्विभाजित तना
मैं चाँदी की सुराही लिए
खड़ा रहा कुछ देर
फिर कुछ देर और--

पीछे से तुम्हारी आवाज़
'पानी मुझे भी देना'

अगले साल

तुम्हें इतनी फिकर है
मैं बन रह जाऊँगा
एक और फिकर

बिलकुल भूलोगे नहीं
आएगा तुम्हारा क्रिसमस कार्ड
यदि मिले - खुश होगे

कौन किस के मन में
इससे ज्यादा रहता है

रोड साइड

सोचते सो गए
पानी के पोखर
स्वप्न में, सड़कें साथ साथ
लेटे दूर तक

आकाश इनके हृदय में
बादलों का आना जाना
कहते कहते रुक गए
ये अधूरे वाक्य धरती पर

ट्रंक कॉल

क्या टेलीफ़ोन की घंटी
तोड़ेगी नौ का समय
या अविजित जाएगा
क्या वहाँ भी इतनी
अगुवानी में सहा
क्या ऐसी ही जिद
कर रही होगी घड़ी

'जैसलमेर दीजिए
सिक्स सैवन सिक्स'

अचेतन

रात भर डीलडौल वाला प्रेम
मुझ पर चढ़ाई करता रहा
कहाँ गए उज्ज्वल संन्यासी विचार
मन के वीभत्स संस्कार,
करवटें बदलता रहा

कारण

साथ सोना सुख था
कपोलों से सटा मुख
यह न मानना कभी—
रात के करीब ढलने पर
चिड़ियाँ जब चहकीं थीं
पहले पहल
मैं आ गया था तुम्हारे पास—
सोने सिर्फ़ इसी लिए,
यह न मानना कभी

सहसा

कप के पीछे
मुस्करा दीं
सहसा
हृदय पर धक्का कैसा ?
क्या मैं कह रहा था ?

मुझ पर फेंक दिया
अपना प्यार उलझा
कप के पीछे
मुस्करा कर सहसा

कल !

क्या कल भी
मुझे याद करते
स्निग्धता चूम जाएगी
तुम्हारी आँखें

नो रिग्रेट्स

तुम्हें घर पर छोड़ने के बाद
मैं कार में बैठा रहा
जाड़ों के धुंध में
तुम्हारे बरामदे में मुड़ जाने के बाद

हो सके इसे रिग्रेट न करना
भूल जाना तो भूल जाना
जाड़ों के धुंध में बैठा रहा मैं
ओह तुम्हारा जैसा प्यार करना !

हँसी

मुझे आ गई हँसी
वह न रुक सकी
दो प्रौढ़ों की दूरी
इस तरह टूटी

फिर चुप्पी स्कूल मास्टर ने
जमाई क्लास
पर हमें तो हँसी
ला चुकी थी पास

तुम भी मुस्कराते
न रुक सकीं
मुझे तो आ गई हँसी

साल गिरह : १९५९

तुम्हारी आज साल गिरह थी
आँख खुली – बजता था कहीं
पुलिस का बैंड सुबह सुबह
हर तरफ़ हर्ष के लक्षण
दिन भर मिले इसी तरह

जैसलमेर का हर कोना
खुश था और चाहता था
तुम्हारा यहाँ होना

बाकी

बस मुझे क्या बचा—
किसी उज्ज्वल तारों की रात
गज़ल-सी गुनगुना लेना
एक भूली भटकी बात

सिनेमा के फ़ॉयर में प्रायः
सदा की तरह देर में शायद
आने ही वाली होती है
वह मेरे जीवन में प्रायः

खुशी

मुझे इतनी खुशी हुई
कि मैं रात भर जागता रहा
सारी रात कुछ न लगी
सुबह तक मन में हँसता रहा

लाज

पक्षी जैसे उतरे
सफेद पंख खोले
वक्ष पर किए वहन
आकाश का गहरा वज़न
धीरे धीरे

तुमने कहा था मुझे
अपनी बाहों में लेते
छोड़ती हूँ लाज
आज से
धीरे धीरे

दुबारा

कैसे अबोध हो गया हृदय
मैं तो न था ऐसा
लज्जाशील एकाएक
बीस साल पहले का

क्या धुल जाएगी इस तरह
यह पिछले वर्षों की मलिनता
दृष्टि पर बड़ी धृष्टता

ओस से भीगा
सर उठाता है
संकोचमय प्यार
लो दूसरी बार

पहली बार

शाम में बहुत चिड़ियाँ थीं
    लुट रही थी सुनहली हवा
कमरे के एकान्त में मैंने
    तुम्हारा नाम हल्के से कहा

बेवकूफ़ी

कल याद करोगी
किस तरह
मुस्कराहट की फीकी
शाम में

यदि कुछ कहोगी
क्या यही
उस पास बैठे से
हम कभी कर बैठते हैं
क्या क्या बेवकूफ़ी

स्वप्नों के हंस

तुम्हारे सिरहाने
स्वप्नों को देखा
शान्त झील में मग्न हंस
भाग्य की मृदु होती रेखा

वे सफेद, कहाँ गए
आँख खोलते ही
तुमने कुछ न समझ
मुस्करा – मुझे देखा

सरकिट हाउस : जोधपुर

गर्मियों की सुबह
स्पर्श सुनहले
इतने दिनों बाद
यह मुँह तक आते पेड़

रेल का गम्भीर धुँआ
हल्के पाँव चल दिया

लान में खुशनुमा प्रभात
एक दो चिड़ियाँ

१९३

एक शाम

फिर धुँधला गई शाम
मैंने तुम्हारे चेहरे पर
एक बार पढ़ा प्यार
फिर धुँधला गई शाम

क्यों

तुमने मुझसे क्यों कहा
कुछ देर रुक जाओ
तब से तुम्हारे पास
रुक गया हृदय

मुझे तो आदत हो रही थी
सुबह और शाम करने की
तुमने मुझसे क्यों कहा
तुम्हारे रोज़ उदास इतने क्यों

घाटी के शोर

जितने पेड़ हिल रहे हैं
हवा में आज रात
घाटी के सब शोर

—गूँज रहे हैं हमारी बातों से
—सहल किए प्यार का
हर्ष-सा हलका शोर

—जो छोड़ दिए हमने मुक्त कर
हृदय के छिपे चोर

खारापन

हमारे हर्ष के नीचे
व्हेल - से प्रयोजन
अस्थायी द्वीप
खारापन

यहाँ

जीवन मीठा है
तुम्हारे खयालों के
आसपास होने से
—मुझे घेरे होंगी
तुम्हारे मन की बातें—
इस कल्पना में
मन डूबा है

ये हवा - हवा
लगती - सी है
मैं यहाँ हूँ
और यहाँ को
तुम्हारे अनुभव से
ठगती - सी है

राह का बाग

मिलोगी ?　　मन　पूछता　है
रात　भर　पूछता　रहा
रेल　की　खटकन　में
पास　आता　था　तुम्हारा　शहर

जब　किसी　पर　कोई
अधिकार　न　हो
पाऊँगा　सिर्फ़　भटकन
प्लेटफारम　पर　फैला　उदास
सुबह　का　पहला　पहर